# धर्म्मपुस्तक

अर्थात्

## पुराना और नया धर्म्म नियम

जो

इब्रनी और यूनानी भाषा से हिन्दी में किया गया।

---

THE

# HOLY BIBLE

CONTAINING THE

## OLD AND NEW TESTAMENTS

IN THE

HINDI LANGUAGE.

*TRANSLATED OUT OF THE ORIGINAL TONGUES.*

---

ALLAHABAD.
BRITISH AND FOREIGN BIBLE SOCIETY,
(NORTH INDIA AUXILIARY.)

1909.

# पुराने और नये धर्म्म नियम

## की पुस्तकों के नाम

और

## उन का सूचीपत्र और पर्व्वों की संख्या।

---

### पुराने नियम की पुस्तकें।

| पुस्तकों के नाम। | अध्याय। | पुस्तकों के नाम। | अध्याय। |
|---|---|---|---|
| उत्पत्ति ... ... ... | ५० | सभोपदेशक। ... ... | १२ |
| निर्गमन। ... ... | ४० | श्रेष्ठगीत। ... ... | ८ |
| लैव्यव्यवस्था। ... ... | २७ | यशायाह। ... ... | ६६ |
| गणना। ... ... | ३६ | यिर्मयाह। ... ... | ५२ |
| व्यवस्थाविवरण। ... ... | ३४ | विलापगीत। ... ... | ५ |
| यहोशू। ... ... | २४ | यहेजकेल। ... ... | ४८ |
| न्यायियों का वृत्तान्त। ... ... | २१ | दानिय्येल। ... ... | १२ |
| रूत का वृत्तान्त। ... ... | ४ | होशे। ... ... | १४ |
| शमूएल नाम पहिली पुस्तक। ... ... | ३१ | योएल। ... ... | ३ |
| शमूएल नाम दूसरी पुस्तक। ... ... | २४ | आमोस। ... ... | ९ |
| राजाओं के वृत्तान्त पहिला भाग। ... | २२ | ओबद्याह। ... ... | १ |
| राजाओं के वृत्तान्त दूसरा भाग। ... | २५ | योना। ... ... | ४ |
| तवारीख की पहिली पुस्तक। ... ... | २९ | मीका। ... ... | ७ |
| तवारीख की दूसरी पुस्तक। ... ... | ३६ | नहूम। ... ... | ३ |
| एज्रा। ... ... | १० | हबक्कूक। ... ... | ३ |
| नहेम्याह। ... ... | १३ | सपन्याह। ... ... | ३ |
| एस्तेर। ... ... | १० | हाग्गै। ... ... | २ |
| अय्यूब। ... ... | ४२ | जकर्याह। ... ... | १४ |
| स्तोत्रसंहिता। ... ... | १५० | मलाकी। ... ... | ४ |
| नीतिवचन। ... ... | ३१ | | |

---

# नये नियम की पुस्तकें।


| पुस्तकों के नाम। | अध्याय। | पुस्तकों के नाम। | अध्याय। |
|---|---|---|---|
| मत्ती रचित सुसमाचार। ... ... | २८ | तिमोथियुस को पावल प्रेरित की पहिली पत्री। | ६ |
| मार्क रचित सुसमाचार। ... ... | १६ | तिमोथियुस को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री। | ४ |
| लूक रचित सुसमाचार। ... ... | २४ | तीतस को पावल प्रेरित की पत्री। ... | ३ |
| योहन रचित सुसमाचार ... ... | २१ | फिलेमोन को पावल प्रेरित की पत्री। ... | १ |
| प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त। ... ... | २८ | इब्रियों को (पावल प्रेरित की) पत्री। ... | १३ |
| रोमियों को पावल प्रेरित की पत्री। ... | १६ | याकूब प्रेरित की पत्री। ... ... | ५ |
| कुरिन्थियों को पावल प्रेरित की पहिली पत्री। | १६ | पितर प्रेरित की पहिली पत्री। ... ... | ५ |
| कुरिन्थियों को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री। | १३ | पितर प्रेरित की दूसरी पत्री। ... ... | ३ |
| गलातियों को पावल प्रेरित की पत्री। ... | ६ | योहन प्रेरित की पहिली पत्री। ... ... | ५ |
| इफिसियों को पावल प्रेरित की पत्री। ... | ६ | योहन प्रेरित की दूसरी पत्री। ... ... | १ |
| फिलिपीयों को पावल प्रेरित की पत्री। ... | ४ | योहन प्रेरित की तीसरी पत्री। ... ... | १ |
| कलस्सीयों को पावल प्रेरित की पत्री। ... | ४ | यिहूदा की पत्री ... ... | १ |
| थिसलोनिकियों को पावल प्रेरित की पहिली पत्री। | ५ | योहन का प्रकाशितवाक्य। ... ... | २२ |
| थिसलोनिकियों को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री। | ३ | | |

# उत्पत्ति नाम पुस्तक ।

(सृष्टि का वर्णन.)

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथिवी को सिरजा ॥ २ । और पृथिवी यों ही सुनसान पड़ी थी और गहिरे जल के ऊपर अंधियारा था और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर ऊपर मण्डलाता था ॥ ३ । तब परमेश्वर ने कहा उजियाला होवे सो उजियाला हो गया ॥ ४ । और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है और परमेश्वर ने उजियाले और अंधियारे को अलग अलग किया ॥ ५ । और परमेश्वर ने उजियाले को दिन कहा और अंधियारे को उस ने रात कहा और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो एक दिन हो गया ॥

६ । फिर परमेश्वर ने कहा जल के बीच ऐसा एक अन्तर होवे कि जल दो भाग हो जावे ॥ ७ । सो परमेश्वर ने एक अन्तर करके उस के नीचे के जल और उस के ऊपर के जल को अलग अलग किया और वैसा ही हो गया ॥ ८ । और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो दूसरा दिन हो गया ॥

९ । फिर परमेश्वर ने कहा आकाश के नीचे का जल एक स्थान में एकट्ठा होवे और सूखी भूमि दिखाई देवे और वैसा ही हो गया ॥ १० । और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथिवी कहा और जो जल एकट्ठा हुआ उस को उस ने समुद्र कहा और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ ११ । फिर परमेश्वर ने कहा पृथिवी से हरी घास और बीजवाले छोटे छोटे पेड़ उगने लगें और फलदाई वृक्ष भी जो अपनी अपनी जाति के अनुसार फलें और जिन के बीज पृथिवी पर उन्हीं में होवें सो भी उगने लगें और वैसा ही हो गया ॥ १२ । सो पृथिवी से हरी घास और छोटे छोटे पेड़ उगने लगे जिन में अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होता है और फलदाई वृक्ष जिन के बीज एक एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं सो भी उगने लगे और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ १३ । और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो तीसरा दिन हो गया ॥

१४ । फिर परमेश्वर ने कहा दिन और रात अलग अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां होवें और वे चिन्हों और नियत समयों और दिनों और बरसों के कारण होवें ॥ १५ । और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृथिवी पर प्रकाश देनेहारी भी ठहरें और वैसा ही हो गया ॥ १६ । इस रीति परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं उन में से बड़ी ज्योति तो दिन पर प्रभुता करने के लिये और छोटी ज्योति रात पर प्रभुता करने के लिये बनाई और तारागण को भी बनाया ॥ १७ । और परमेश्वर ने उन को आकाश के अन्तर में इस लिये रक्खा कि वे पृथिवी पर प्रकाश देवें ॥ १८ । और दिन और रात पर प्रभुता करें और उजियाले और अंधियारे को अलग अलग करें और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ १९ । और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो चौथा दिन हो गया ॥

२० । फिर परमेश्वर ने कहा जल जीते प्राणियों से बहुत ही भर जावे और पक्षी पृथिवी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें ॥ २१ । सो परमेश्वर ने जाति जाति के बड़े बड़े जलजन्तुओं को और उन सब जीते प्राणियों को भी सिरजा जो चलते हैं जिन से जल बहुत ही भर गया और एक एक जाति के उड़नेहारे पक्षियों को भी सिरजा और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ २२ । और परमेश्वर ने यह कहके उन को आशीष दिई कि फूलो फलो और समुद्र के जल में भर जाओ और पक्षी पृथिवी पर बढ़ें ॥ २३ । और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो पांचवां दिन हो गया ॥

२४ । फिर परमेश्वर ने कहा पृथिवी से एक एक जाति के जीते प्राणी उत्पन्न होवें अर्थात् ग्रामपशु और रेंगनेहारे जन्तु और पृथिवी के बनपशु जाति